नागार्जुन

प्रत्येक रचनाकार का व्यक्तित्व और कृतित्व होता है। व्यक्तित्व में वह स्वयं होता है और रचनाओं में उसके जीवन की उपलब्धि होती है। उसने जो कुछ शब्द ब्रह्म की उपासना की होती है, सरस्वती के मन्दिर में जो भी पत्र पुष्प चढ़ाये होते हैं, वे उसके कृतित्व में आते हैं।

जीवन परिचय—नागार्जुन का वास्तविक नाम वैद्यनाथ मिश्र है। यानी इनका पुराना उपनाम है। इनका जन्म सन् 1911 में तरौनी जिला में दरभंगा, बिहार में हुआ। उस दिन ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा थी। नागार्जुन की शिक्षा संस्कृत के माध्यम से आरम्भ हुई। आप संस्कृत के अतिरिक्त पालि, मैथिली और हिन्दी के भी विद्वान थे। आपने हिन्दी के समान संस्कृत और पालि में भी काव्य रचना की है। नागार्जुन घुमक्कड़ स्वभाव के थे। राहुल सांस्कृत्यायन सम्पर्क में आकर आपने बौद्ध दर्शन और साम्यवाद का अध्ययन किया। लेखन पर निर्भर रहने के कारण अर्थाभाव से पीड़ित रहे। जीविका के लिए कलकत्ता, काशी, दिल्ली और प्रयाग के चक्कर काटते रहे। पण्डित सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' के समान प्रकाशकों ने उनका भी शोषण किया। नागार्जुन स्वभाव से सरल, निरभिमानी और हँसमुख व्यक्ति थे। आर्थिक अभाव से ग्रस्त, दुबले-पतले और साँस के रोगी होने पर भी नागार्जुन का फक्कड़पन नहीं छूटा। वे हँसते थे, खूब हँसते थे। सामान्य बातचीत से उनकी विद्वत्ता का अनुमान लगाना सम्भव नहीं था। परिचित लोग प्यार और आदर से उन्हें नागा बाबा अथवा बाबा कहते थे। नागार्जुन ने कवि, उपन्यासकार और अनुवादक के रूप में विशेष ख्याति अर्जित की। आर्थिक स्थिति की। दृष्टि से उनका जीवन निम्न मध्यवर्गीय रहा। इनके ग्राम्य जीवन की साक्षी इनकी अनेक कविताएँ हैं।

जीवन के दु:ख ने नागार्जुन को निराशावादी नहीं बनाया, संघर्षप्रिय बना दिया। अपने दु:ख के भीतर से अपने से भी असंख्य छोटे लोगों के दु:ख को इन्होंने समझा। यही कारण है कि दलित वर्ग के पक्ष में खड़े होकर इन्होंने उसकी शक्ति को उभारने तथा उसकी अन्तिम विजय में विश्वास दिलाने वाली बहुत-सी रचनाएँ लिखने में इन्होंने अपनी प्रतिभा का उपयोग किया। काव्य रचना करते समय ये व्यक्तिगत अर्थात् अपने निजी दु:ख पर ही नहीं रुके, अपितु बार-बार व्यापक दु:ख पर प्रकाश डालने वाली रचनाएँ करते रहे। यही सच्चे कवि की पहचान है। नागार्जुन की पहचान भी यही है। इस युग में जिन संवेदनशील कवियों ने धरती, जनता और श्रम के गीत गाये हैं, इस युग के ऐसे संवेदनशील कवियों में नागार्जुन अगली पंक्ति में रहे और इसी पंक्ति में इसका नाम अमर रहेगा।

स्वभाव—नागार्जुन की प्रतिभा के रचनात्मक पक्ष के साथ उसका एक विध्वंसात्मक पक्ष भी है जो प्राय: आक्रमण का रूप धारण करता है। बहुत ही सुन्दर, सहज और कल्याणमय रूप के पीछे जो कुत्सित, कृत्रिम और अकल्याणकारी रूप छिपा रहता है, उसे नागार्जुन ने खोलकर दिखाया है।

नागार्जुन का आक्रमण प्राय: व्यंग्य का रूप धारण है। व्यंग्य करते समय राजनीतिज्ञ, दार्शनिक, समाज सुधारक, कलाकार किसी को नहीं छोड़ा है। ढोंग किसी प्रकार का हो, कितने ही बड़े आदमी का हो, नागार्जुन सहन नहीं कर पाते। भारत स्वतन्त्र होने पर केन्द्र सरकार के गृहमन्त्री गोविन्द बल्लभ पन्त भी उनके व्यंग्य के शिकार हुए।

इंग्लैण्ड की महारानी जब स्वतन्त्र भारत का दौरा करने आयीं तो जवाहर लाल नेहरू ने उसी समय स्वतन्त्र भारत के प्रधानमन्त्री के रूप में भारतीय जनता से महारानी के स्वागत का आग्रह किया था। उस समय पण्डित नेहरू भी नागार्जुन के व्यंग्य से नहीं बच सके थे। उस समय नागार्जुन ने लिखा था—

आओ रानी हम ढोयेंगे पालकी।
यही हुई है राय जवाहर लाल की॥

कृतित्व (रचनाएँ)—विश्वम्भर मानव ने अपनी पुस्तक 'नयी कविता: नये कवि' में नागार्जुन की केवल दो काव्य-कृतियों के प्रकाशन का संकेत किया है—युगधारा, सन् 1956 और सतरंगे पंखों वाली, सन् 1959. संभव

Scanned with CamScanner

है, जिस समय विश्वम्भर मानव ने अपनी पुस्तक की रचना की हो, उस समय नागार्जुन के दो ही कविता संग्रह प्रकाशित हुए हैं।

मधुबाला नयाल ने नागार्जुन की रचनाओं का विस्तार से परिचय देते हुए लिखा है—"इनके प्रसिद्ध काव्य-संकलन हैं—युगधारा, सतरंगे पंखों वाली, प्यासी पथराई आँखें, खिचड़ी। विप्लव देखा हमने, तुमने कहा था, हजार-हजार बाहों वाली, पुरानी जूतियों का कोरस, रत्न गर्भ, ऐसे भी हम क्या-ऐसे ही तुम क्या, आखिर ऐसा क्या कह दिया मैंने, इस गुब्बारे की छाया में, भूल जाओ पुराने सपने अपने खेत में, पका कटहल, चित्रा, पत्रहीन नग्न गाछ।"

मैथिली कविता का संग्रह—भस्मांकुर खण्डकाव्य।

साहित्य जगत् में नागार्जुन की प्रसिद्धि श्रेष्ठ उपन्यासकार के रूप में भी है। उनके उपन्यास हैं—रतिनाथ की चाची, बलचनमा, नई पौधा, बाबा बटेसर नाथ, वरुण के बेटे, दु:ख मोचन, कुम्भीपाक, अभिनन्दन, उग्र तारा, इमरतिया, पारो। इनके अतिरिक्त आपका मैथिली भाषा में रचित उपन्यास, 'नवतुरिया' भी है।

आपने 'एक व्यक्ति : एक युग' निराला की रचना समीक्षात्मक जीवनी के रूप में की है। आपके स्फुट निबन्ध हैं—अन्नहीनम् क्रियाहीनम्, बम्भोले नाम, आपकी कहानियों का संकलन है—आसमान में चन्दा तारे।

अपनी रचना 'पत्रहीन नग्न गाछ' पर नागार्जुन को साहित्य अकादमी पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है।

नागार्जुन की काव्यगत विशेषताएँ

Scanned with CamScanner